Perumbidugu Mutharaiyar II (Samrat Suvaran Maran) (705 AD – 745 AD)

Perumbidugu Mutharaiyar II was one of the most distinguished rulers of ancient Tamil Nadu. Also known as Suvaran Maran and Perarasar Perumbidugu, he ruled the fertile and culturally vibrant Kaveri delta region with unmatched leadership, courage, and a deep commitment to public welfare during the 8th century CE.

He reigned from Tiruchirappalli, extending his authority across what is today Thanjavur, Pudukkottai, Perambalur, and Thiruvarur. Belonging to the renowned Mutharaiyar dynasty, which governed the heart of Tamil Nadu between 600 and 900 CE, his lineage is celebrated for its remarkable contributions to military, administrative, religious, and cultural spheres. As members of the powerful hunter-warrior communities of India, the Mutharaiyar rulers rose to prominence through their martial skills and became custodians of Tamil society's spiritual and literary traditions.

Ascending the throne in 705 AD after his father, Maran Parameshwaran, Perumbidugu Mutharaiyar II went on to rule for four decades, a reign marked by expansion, stability, and cultural growth. He participated in 16 major battles, including two in alliance with Pallava King Nandivarman II, and remained undefeated throughout his reign. These victories further strengthened his position as a powerful regional ruler during a time of dynastic flux, when the Cheras, Cholas, and Pandyas were prominent rivals.

His military campaigns were fought across several strategically significant regions such as Kodumbalur, Manalur, Thingalur, Kanthalur, Azhundhiyur, Karai, Marangur, Pugazhi, Annalvayil, Sembonmari, Vengodal, and Kannanur. These successful campaigns helped solidify his dominion over key trade routes and cultural centers of the Kaveri delta. His exceptional command and fearless leadership earned him several honorific titles which were later engraved in temple pillars and copper plates. These include Chatru Kesari, Abimana Theeran, Vazhvari Vengai, Shri Chathru Mallan, Shri Kalvar Kalvan, Thanjaikon, Vallakkon, and Vanmaran. Each title reflected a distinct facet of his legacy — as a protector, warrior, strategist, and noble ruler.

Perumbidugu Mutharaiyar II was not only a valiant king but also a generous patron of Tamil literature, poetry, and temple architecture. His court welcomed and supported several celebrated Tamil poets and scholars of the time. Among them were Pachizhvel Namban, Kottatru Vellam Perumanar, Aachariyar Aniruthar, and Amarunilai Ayina Kuvavan Kanchan, whose verses immortalised his achievements and ideals.

These literary compositions, particularly the Venbaas, were later inscribed on temple walls, ensuring their preservation through generations. The Sendalai Sundhareswarar Temple in Thanjavur district houses many of these inscriptions. These verses not only celebrate his conquests and valour but also offer insights into the cultural and ethical foundations of his rule.

Equally important was his devotion to religion and temple-building. He extended royal patronage to several temples, including the historic Vallam Ekawari Amman Temple near Thanjavur. This temple, with its deity Pidari Amman (also known as Kaalapidarari), was closely associated with the royal family's spiritual beliefs. It continues to stand today as a living testimony to the dynasty's commitment to preserving Shaivite traditions and village-based temple worship.

The architectural elegance and religious depth of such temples reflected the spiritual ethos of his reign, and his titles Thanjaikon and Vallakkon possibly indicate his personal and dynastic connections to these sacred sites.

His contributions are acknowledged in revered Tamil literary works like Naladiyar and Muthollayiram, which celebrate the martial traditions and moral wisdom of the Mutharaiyar kings. Inscriptions from sites like Killukottai and Senthalai provide further evidence of the administrative sophistication and cultural patronage during his time.

Perumbidugu Mutharaiyar II's reign represents a golden chapter in Tamil history — one where political stability, military excellence, cultural flowering, and religious continuity coexisted. His governance model inspired later rulers and his legacy remains etched into the history of South India.

India Post proudly releases a Commemorative Postage Stamp on the occasion of his 1,350th birth anniversary, celebrating the life and legacy of Perumbidugu Mutharaiyar II, a king whose strength in battle was matched by his wisdom in rule, and whose enduring impact still echoes in the temples, texts, and traditions of Tamil Nadu.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet:	:	Shri Brahm Prakash
Text	:	Referenced from the content provided by the proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts



पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय (सम्राट सुवरन मारन)

Perumbidugu Mutharaiyar II, (Samrat Suvaran Maran)
705 AD - 745 AD

विवरणिका BROCHURE

पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय (सम्राट सुवरन मारन) (705 ईस्वी – 745 ईस्वी)

पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय, प्राचीन तमिलनाडु के सबसे प्रतिष्ठित शासकों में से एक थे। उन्हें सुवरन मारन और पेरारसर पेरुम्बिडुगु के नाम से भी जाना जाता था। पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय ने 8वीं शताब्दी के दौरान कावेरी डेल्टा क्षेत्र पर अद्वितीय नेतृत्व, साहस और जन कल्याण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ शासन किया जिसकी भूमि उपजाऊ थी और यह सांस्कृतिक रूप से समृद्ध था।

उन्होंने तिरुचिरापल्ली से शासन किया और आज के तंजावुर, पुदुक्कोट्टई, पेरम्बलुर और तिरुवरूर तक अपने शासन का विस्तार किया। उनका संबंध 600 ई. और 900 ई. के बीच तमिलनाडु के हृदयस्थल पर शासन करने वाले प्रसिद्ध मुथरैयार राजवंश से था, उनके वंश को सैन्य, प्रशासनिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए जाना जाता है। भारत के शक्तिशाली शिकारी–योद्धा समुदायों के सदस्य के रूप में, मुथरैयर शासक अपने युद्ध कौशल के माध्यम से प्रमुखता से उभरे और तमिल समाज की आध्यात्मिक और साहित्यिक परंपराओं के संरक्षक बन गए।

अपने पिता, मारन परमेश्वरन के बाद 705 ईस्वी में सिंहासन पर आरूढ़ होने के बाद, पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय ने चार दशकों तक शासन किया। विस्तार, स्थिरता और सांस्कृतिक विकास उनके शासनकाल की पहचान थे। उन्होंने 16 प्रमुख युद्धों में भाग लिया, जिनमें से दो में पल्लव राजा नंदीवर्मन द्वितीय उनके साथ थे। वे अपने पूरे शासनकाल में अपराजित रहे। चेर, चोल और पांड्य प्रमुख प्रतिद्वंदी होने के बावजूद इन विजयों ने राजवंशीय उतार–चढ़ाव के समय में एक शक्तिशाली क्षेत्रीय शासक के रूप में उनकी स्थिति को और मजबूत किया।

उनके सैन्य अभियान कई रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे कोडुंबलूर, मनालुर, तिंगलुर, कंथलूर, अजूंधियूर, करई, मारंगुर, पुगाज़ी, अन्नलवायिल, सेम्बोनमारी, वेंगोडल और कन्नानूर में लड़े गए थे। इन सफल अभियानों ने कावेरी डेल्टा के प्रमुख व्यापार मार्गों और सांस्कृतिक केंद्रों पर उसके प्रभुत्व को मजबूत करने में मदद की। उनकी असाधारण कमान और निडर नेतृत्व ने उन्हें कई सम्मानजनक उपाधियां दिलाईं जिन्हें बाद में मंदिर के स्तंभों और तांबे की प्लेटों में उकेरा गया। इनमें छत्रु केसरी, अबिमाना थेरन, वाझवारी वेंगई, श्री छत्रु मल्लन, श्री कलवार कलवन, थंजाइकोन, वल्लक्कोन और वनमारन शामिल हैं। प्रत्येक उपाधि उनकी विरासत के एक विशिष्ट पहलू – एक रक्षक, योद्धा, रणनीतिकार और महान शासक के रूप को दर्शाती है।

पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय न केवल एक वीर राजा थे, बल्कि तमिल साहित्य, काव्य और मंदिर वास्तुकला के उदार संरक्षक भी थे। उनके दरबार में उस समय के कई प्रसिद्ध तमिल कवियों और विद्वानों को स्वागत, सत्कार और सहायता प्रदान की गई। उनमें पचिज़वेल नंबन, कोट्टात्रु वेल्लम पेरुमनार, अचारियार अनिरुथर और अमरुनिलई अयिना कुवावन कंचन प्रमुख थे, जिनके छंदों ने उनकी उपलब्धियों और आदर्शों को अमर बना दिया।

इन साहित्यिक रचनाओं, विशेषकर वेनबास, को बाद में मंदिर की दीवारों पर अंकित किया गया, जिससे आने वाली पीढ़ियों को उनके विषय में पता चला। तंजावुर जिले के सेंदलाई सुंदरेश्वर मंदिर में इनमें से कई शिलालेख हैं। इन श्लोकों में न केवल उनकी विजयों और वीरता का गुणगान किया गया है, बल्कि उनके शासन के सांस्कृतिक और नैतिक आधारों की भी जानकारी दी गई है।

धर्म और मंदिर निर्माण के प्रति उनकी निष्ठा भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी। उन्होंने तंजावुर के निकट ऐतिहासिक वल्लम एकवारी अम्मन मंदिर सहित कई मंदिरों को शाही संरक्षण प्रदान किया। यह मंदिर, अपनी देवी पिदारी अम्मन (जो कालापीदारारी के नाम से भी प्रसिद्ध है) के साथ, शाही परिवार की आध्यात्मिक मान्यताओं से निकटता से जुड़ा था। यह मंदिर आज भी शैव परंपराओं और ग्राम–आधारित मंदिर पूजा के संरक्षण के प्रति राजवंश की प्रतिबद्धता का जीवंत प्रमाण है।

इन मंदिरों की स्थापत्य कला और धार्मिक आस्था उनके शासनकाल के आध्यात्मिक लोकाचार को दर्शाती है, और उनकी तंजाइकोन और वल्लक्कोन की उपाधियां संभवतः इन पवित्र स्थलों से उनके व्यक्तिगत और राजवंशीय संबंधों का प्रतीक हैं।

उनके योगदान को नलाडियार और मुथोलयिरम जैसी प्रतिष्ठित तमिल साहित्यिक कृतियों में स्वीकार किया गया है, जो मुथरैयर राजाओं की युद्ध परंपराओं और नैतिक ज्ञान का गुणगान करती हैं। किल्लुकोट्टई और सेंथलाई जैसे स्थलों के शिलालेख उनके काल के प्रशासनिक परिष्कार और सांस्कृतिक संरक्षण का भी प्रमाण प्रदान करते हैं।

पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय का शासनकाल तमिल इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय को दर्शाता है – एक ऐसा अध्याय जहां राजनीतिक स्थिरता, सैन्य उत्कृष्टता, सांस्कृतिक उत्कर्ष और धार्मिक निरंतरता एक साथ विद्यमान थी। उनके शासन मॉडल ने बाद में आने वाले शासकों को प्रेरित किया और उनकी विरासत दक्षिण भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

भारतीय डाक, उनकी 1,350वीं जयंती के अवसर पर एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा है। यह पेरुम्बिडुगु मुथरैयर द्वितीय के जीवन और विरासत को एक ऐसे राजा के रूप में स्मरण करता है जिनकी युद्ध में ताकत और शासन में उनकी बुद्धिमत्ता एक समान थी और उनका स्थायी प्रभाव आज भी तमिलनाडु के मंदिरों, ग्रंथों और परंपराओं में गूंजता है।

आभार:

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे पाठ : श्री ब्रह्म प्रकाश

: प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसे 500p
मुद्रितडाक–टिकटें Stamps Printed	: :	305130 305130
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00